Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

अविवेकपूर्ण नगर नियोजन व पेयजल संकट (भीलवाड़ा नगर का विशेष अध्ययन)

Dr. Santosh Anand*

Associate Professor, (Geography), Shri M.L.V Government PG College, Bhilwara, Rajasthan

सार – ***प्राचीनकाल से ही नगर मानव की विकास यात्रा के प्रतीक रहे हैं। नगरों की अवधारणा के पीछे अपने यायावर जीवन को स्थायित्व व समग्र सुरक्षा मानव का प्रमुख ध्येय रहा है। यह तथ्य प्रमाणित है कि स्थान विशेष की भौगोलिक विशिष्ठताऐं मानव को लौकिक व परालौकिक गतिविधियों हेतु आकर्षित करती है और कालान्तर में वही तत्व उस नगर की उपादेयता व प्रासंगिकता को भी तय करते हैं। इतिहास गवाह है कि मानव की लौकिक विकास की भूख ने ही नगरों के कार्यिक विशिष्टताओं के मार्ग खोले हैं।***

----------X----------

प्रस्तावना

अपनी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण सदैव भारत भूमि की सभी मानवीय लौकिक गतिविधियाँ कृषि के इर्द-गिर्द संचालित होती रही हैं, अतैव् यहाँ नगरीय अवधारणा विरोधाभाषी तत्व है, परन्तु प्रशासकीय, राजकीय व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र (नगर) सदैव समयानुकूल भव्यता युक्त रहे हैं। इनके समानान्तर ही भारतीय जनमानस की परालौकिक मनोवृति व आकांक्षाओं ने भी भारत में कई नगरीय केन्द्र खड़े किये, इनकी भौगोलिकता ने ही उन्हें वैशिष्टता प्रदान की, परन्तु श्रद्धा, साधना व सात्विकता के यह केन्द्र सदैव भव्यता से परे रहे। औद्योगिक क्रान्ति व वर्तमान उदारवाद की पृष्ठभूमि में वैशिष्टता युक्त नवीन नगर केन्द्रों का समूचे विश्व के साथ-साथ भारत में भी तेजी से उदय हुआ, परन्तु वैशिष्टता के फेर में समग्र व सतत् विकास की अवधारणा पीछे छूट गयी और मानव जीवन नर्क की दिशा में चल पड़ा।

उसी लौकिक विकास के परिप्रेक्ष्य में भीलवाड़ा नगर (राजस्थान प्रान्त) के विकास के विभिन्न चरणों के अध्ययन से यह ध्यान में आया कि इस नगर के व्यापारिक व कृषि इतिहास को मद्देनज़र रख कर किये गये राजनीतिक प्रयासों से यह वस्त्र उद्योग का केन्द्र तो बना और विकास का भौतिक स्वरूप धरती पर भी नज़र आया परन्तु नगर का एकपक्षीय विकास अन्य न्यूनतम मानवीय आवश्यकताओं को ऐसे निगलता चला जा रहा है कि आज आम आदमी का जीना दुर्भर हो गया है।

किसी भी क्षेत्र के छोटे व मध्यम आकार वाले नगरों का उस प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होते हुऐ भी नगर नियोजन व प्रादेशिक आयोजना में इन्हें पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया गया है। भीलवाड़ा नगर के अध्ययन का उद्देश्य एक ओर अध्ययनात्मक है तो दूसरी ओर व्यावहारिक भी। लौकिक विकास की चकाचैंध व लोकर्पणा हमारा अध्ययनात्मक पक्ष है, जो प्रचलित भूमि उपयोग नगरीय केन्द्र के विकास के परीक्षण तथा नगर के आन्तरिक भागों में भिन्न-भिन्न विशेषताओं से सम्बन्धित सामान्यीकरणों की खोज करना है जो कि नगर-विषयक ज्ञान वृद्धि में सहायक होते हैं।

व्यावहारिक उद्देश्य के अन्तर्गत भूमि उपयोग अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तावित भूमि उपयोग प्रस्तुत करना है जिसका घनिष्ठ संबंध नगर नियोजन से है। किसी भी नगर के भूमि उपयोग विषयक आधारभूत ज्ञान के अभाव में उसका नियोजन अपूर्ण होता है। अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण तथा उपलब्ध सांख्यिकीय सूचनाओं के आधार पर नगर के भूमि उपयोग वर्गीकरण प्रस्तुत करना, भीलवाड़ा नगर के विकसित एवं अविकसित भाग के संदर्भ में विभिन्न उपयोगों का विश्लेषण करना, नगर के भूमि-उपयोग मानचित्र तैयार करना, निर्मित क्षेत्र के विस्तार की दिशा ज्ञात करना, नगरीय प्रसार जनित पर्यावरण असंतुलन पर ध्यान आकृष्ट करना, विभिन्न कार्यों के वितरण प्रतिरूप के आधार पर कार्यात्मक क्षेत्रों का पेटिगत सीमांकन करना, विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों का स्थितिगत विश्लेषण तथा अतिक्रमण क्षेत्र ज्ञात करना, भूमि उपयोग विषयक संतुलन स्थापना हेतु प्रस्तावित भूमि उपयोग मानचित्रों का निर्माण करना तथा नगरों के समग्र विकास के

www.ignited.in

उपायों की अनुशंसा, प्रस्तुत शोध कार्य के अभीष्ट में सम्मिलित है।

अध्ययन क्षेत्र परिचय

भीलवाड़ा शहर भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में अवस्थित राजस्थान प्रान्त के दक्षिण-पूर्व में 25॰21' उत्तरी अक्षांश व 74॰40' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिसका भौगालिक क्षेत्रफल 118.48 वर्ग किलोमीटर है। शहर की समुद्रतल से ऊँचाई 451 मीटर है। शहर बनास नदी से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है तथा उसकी सहायक कोठारी नदी शहर के उत्तर में प्रवाहित होती है। यह शहर नगर परिषद् क्षेत्र होकर 55 वार्डों में विभक्त है। यहाँ की कुल जनसंख्या 359483 (जनगणना 2011) है जिसमें से पुरूष 187081 तथा महिलाएं 172402 है, जनसंख्या घनत्व 3034 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर, लिंगानुपात 922, साक्षरता दर 82.30 प्रतिशत व कार्यशील जनसंख्या 35.20 प्रतिशत है।

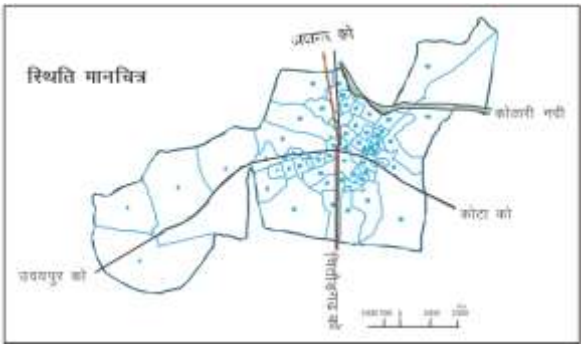

उपसंकल्पनाएँ: प्रस्तावित शोध कार्य में निम्नलिखित उपसंकल्पनाओं का निर्धारण कर उनकी सत्यता / असत्यता को परखा जाना है -

1. भीलवाड़ा नगर में राजनीतिक एवं प्रशासनिक प्रयासों के चलते विकास धरातल पर उतरा है और जो नजर आने लगा है।

2. एकाकी विकास के चलते भीलवाड़ा नगर में मूलभूत संसाधनों की क्रमिक न्यूनता व अनियन्त्रित दोहन से मानव जीवन भयावह स्थिति तक पहुँच गया है।

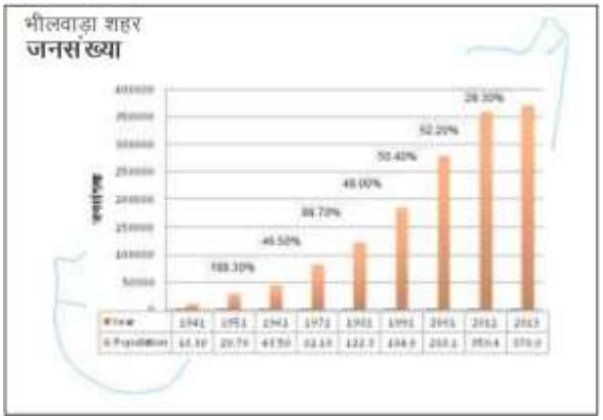

भीलवाड़ा शहर

विगत 10 वर्षों में हुई वर्षा

जिले की औसत वर्षा — 684.00 मि.मी.

क्र.सं.	वर्ष	औसत वर्षा	विचलन मि.मी.
1	2005	951	+ 267
2	2006	546	- 138
3	2007	908	+ 224
4	2008	696	+ 12
5	2009	441	- 243
6	2010	460	- 224
7	2011	750	+ 66
8	2012	820	+ 136
9	2013	570	- 114
10	2014	556	- 128
11	2015	335	- 349

भीलवाड़ा नगर के विकास के पायदान

देश की आजादी से पूर्व तक यह नगर बहुत अधिक उल्लेखनीय औद्योगिक पृष्टभूमि युक्त नगर नहीं था, बगैर किसी भौगोलिक विशिष्टता युक्त यह नगर नैसर्गिक प्रगति पथ पर अग्रसर था, परन्तु कृशि उत्पाद की दृष्टि से सिर्फ एक विशिष्टता कि आस-पास के क्षेत्र में कपास की खेती महत्वपूर्ण थी, अतः अपने रेल व सड़क मार्ग से जुडाव के चलते धीरे-धीरे कपास विक्रय के केन्द्र के रूप में विकसीत होने लगा, साथ ही उससे जूड़ी व्यापारिक गतिविधियों के संचालन के कारण नगर का विकास भी क्रमिक रूप से धरती पर उतरने लगा।

विकास की दृष्टि से जनसंख्या वृद्धि की चर्चा भी समीचीन है, जनसंख्या वृद्धि को नगर के विकास का पर्याय मानना परम्परावादी दृश्टिकोण है, परन्तु जनसंख्या वृद्धि हेतु जिम्मेदार अनेकों आकर्शक तत्वों का अध्ययन विश्लेशण भौगोलिक अध्ययन की वैज्ञानिकता है। सारे देश की तरह ही 1951, इस नगर की भी जनसंख्या वृद्धि व नगरीकरण की ओर पहला कदम सिद्ध हुआ है, अचानक 188 प्रतिशत की वृद्धि ने भविश्य का नगर होने की सम्भावनाओं को पंख जरूर दे दिये, साथ ही इसी वक्त कॉटन जिनिंग मिल्स (पेच) के 1885 व प्रसिद्ध मेवाड़ा टेक्सटाइल्स मिल्स के 1938 में स्थापना ने नगर का विकास मार्ग व सम्भावनाओं का मार्ग प्रसस्त कर दिया।

www.ignited.in

इसी पृष्टभूमि को भविष्यदृष्टा श्री लक्ष्मीपति झुन्झूनूवाला ने पहचाना और भीलवाड़ा वस्त्र उद्योग समूह की नींव 1961 में रखी, और इसके साथ ही नगर की जनसंख्या ने पिछले दशक के मुकाबले 50 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करा दी, यह स्थापना यह सिद्ध करती है कि नवीन उद्योगों की स्थापना नगर के विकास को गति देता रहा है।

इसके पश्चात् आठवें दशक में नगर की अचानक 90 प्रतिशत की आश्चर्य जनक वृद्धि तथा इसके लिए जिम्मेदार तत्वों का विश्लेषण करते हैं तो ध्यान में आता है कि आठवें दशक में राजनीतिक व प्रशासनिक प्रयासों के चलते वस्त्र उद्योग की स्थाना हेतु विशेष रियायतें व सुविधाऐं मुख्य आकर्षण रही। देश भर के उद्योगपतियों ने भीलवाड़ा नगर वरियता को दी, इसके लिए भीलवाड़ा नगर की अपनी भौगोलिक विशिष्टताओं को भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

नगर भी परम्परागत उद्यमवृति, राजकीय वित्तिय सहयोग व अन्य रियायतों के साथ-साथ, कपास की खेती, नगर का देश का विभिन्न मुख्य नगरों से सड़क व रेलमार्गों से जुड़ाव जैसे तत्व महत्वपूर्ण रहे। तुरन्त वस्त्र उद्योग की स्थापना के लिए जितने पानी की आवश्यकता थी उसके यहाँ उपलब्ध होने से भी उद्योग ने तुरन्त गति पकड़ ली और देखते ही देखते भीलवाड़ा नगर भारत के मेनचेस्टर के रूप में विख्यात हो गया।

वस्त्र उद्योग के फलने फूलने के साथ ही नगर का भौतिक विकास भी लाजमी था, अनेकों सहउद्योगों व नवीन व्यापारिक कार्यों की स्थापना ने नगर की शक्ल बदल गयी। रोजगार व रोजीरोटी की सम्भावनाओं ने जनसंख्या स्थानान्तरण को विस्फोटक बना दिया और इसी के चलते इस नवीन नगर ने आसपास के गाँव भी तुरन्त ही शहर ने निगल लिए।

1980 से शुरू हुऐ वस्त्र उद्योग ने 21 वीं सदी के आते-आते एक समृद्ध आर्थिक व्यवस्था का रूप ले लिया। 2015 तक नगर में 1365 पंजिकृत वस्त्र निर्माण यूनिट हो गये, 21 प्रोसेस हाऊस स्थापित हो गये, जिसके परिणाम स्वरूप 8 करोड़ मीटर कपड़ा प्रतिमाह निर्मित होने लगा 70 अरब रूपये का व्यापार तथा 2750 करोड़ रूपयों का कपड़ा भीलवाड़ा से निर्यात होने लगा। साथ ही प्रत्यक्ष रूप से नगर के 40 हजार व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 50 हजार लोगों को इस उद्योग से रोजगार मिलने लगा।

औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार के फलस्वरूप नगर में असामान्य जनसंख्या वृद्धि आंकलित की गई, विशेशरूप से देशभर से अनेक उद्योगपतियों का भीलवाड़ा की ओर पलायन उल्लेखनीय रहा, साथ ही निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का नगर की ओर पलायन भी भारी मात्रा में हुआ। 1970 व 1980 के दशक के मध्य जनसंख्या वृद्धि 88 प्रतिशत आंकलित की गई तथा क्रमिक रूप से प्रत्येक दशक में 50 प्रतिशत के लगभग बढ़ते हुऐ वर्ष 2015 तक जनसंख्या 3,59,000 हो गई। अचानक हुई जनसंख्या वृद्धि व संसाधनों की सीमितता ने नगर में कई समस्याऐं पैदा कर दी। विशेश रूप से पेयजल, आवास, रोजगार, स्वास्थ्यसेवा, अपराध वृद्धि जैसी अनेकांे समस्याओं से नगर को रूबरू होना पड़ रहा है।

गिरता भूमिगत जल व पेयजल समस्या

1980 के पश्चात् औद्योगिक विकास व कपड़ा उद्योग के विकास के साथ ही अचानक हुई नगर की जनसंख्या वृद्धि से यहाँ के लोगों को सबसे पहले जिस समस्या का सामना करना पड़ा वह पेयजल संकट था, और उसी के समाधान और विकल्प खोजते-खोजते भूमिगत जल भी खो दिया और प्रोसेस हाऊसों के विसर्जित दुषित जल से आस-पास की सारी खेती योग्य जमीन व नदियाँ बेकार कर डाली गयी।

1980 के पूर्व तक नगर में पेयजल व भूमिगत जल को लेकर किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी, परन्तु कपड़ा उद्योग के समग्र संचालन के लिए जैसे-जैसे प्रोसेस हाउसों की स्थापना होने लगी भूमिगत जल खत्म होने लगा, क्योंकि एक प्रोसेस हाऊस को चलने के लिए लगभग 15 लाख लीटर पानी की आवश्यकता होती है, और यह प्रोसेस हाऊस अब बढ़कर 21 हो गये अर्थात 3 करोड लीटर पानी प्रतिदिन की आवश्यकता है, अन्य किसी बड़े जलस्रोत के निकट नहीं होने से सारे पानी के लिए भूमिगत जल पर ही निर्भरता है, इसके लिए सरकार की विशेश योजना व उद्योगपतियों ने भविश्य के जल संकट को ध्यान में रखते हुऐ निकटवर्ती लगभग नित्य प्रवाही नदियाँ जैसे बनास व कोठारी के निकट इनकी स्थाना की गई। इससे उद्योगपतियों को यह लाभ हुआ कि नदी की निकटता से कम गहराई पर पानी उपलब्ध होने लगा तथा प्रोसेस के बाद का

www.ignited.in

प्रदुषित जल भी आसानी व कम खर्च में नदी में बहा दिया गया।

भूमिगत जल के विवेकपूर्ण व लालच पूर्ण दोहन से हालत यह हो गये कि आज नगर के आस-पास का भूमिगत जल औसत 300 फीट नीचे तक चला गया है तथा प्रोसेस हाउसों के प्रदुशित जल ने नगर से 30 कि.मी. दूर तक की खेती वाली जमीन भी खेती लायक नहीं रही, 30 कि.मी. आस-पास के गाँव की खेती के नष्ट होने से नगर पर दबाव बढ़ा तथा रोजगार सृजन के बजाय अपार बेरोजगारी ने समूची सामाजिक व्यवस्था को ही बदल कर रख दिया।

दूसरी ओर प्राथमिक आवश्यकता पेयजल संकट से भी नगर को जबरदस्त प्रभावित किया। 1980 से पहले यहाँ इस प्रकार की कोई समस्या नहीं थी, पीने के पानी के लिए कुओं व नलों से पानी लिया जाता था, जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ पानी की आवश्यकता भी बढ़ने लगी, सबसे पहले मेजा बांध का पानी विकल्प बना परन्तु अनिश्चित वर्षा व बढ़ती जनसंख्या ने इस विकल्प को कुछ ही वर्षों में निरर्थक सा लगने लगा। फिर भी 120 लाख लीटर जल की आपूर्ति प्रतिदिन हो रही है तो चार लाख की आबादी के लिए अत्यल्प है, कभी अकेले मेजा से सम्पूर्ण जलापूति हेतु पर्याप्त था।

इसके पश्चात् स्थाई समाधान की ओर बढ़ते हुऐ 2002 से 2005 के मध्य भीलवाड़ा से 48 कि.मी. दूर पर स्थित कंकरोलिया घाटी से भीलवाड़ा पानी लाने की व्यवस्था की गई। लगभग 129 करोड़ रूपये की लागत से बनी इस योजना से 135 मिलियन लीटर पानी भीलवाड़ा शहर को मिलने लगा।

परन्तु आज भी अनिश्चित वर्षा व बढ़ती जनसंख्या के कारण पेयजल की समस्या से शहर मुक्त नहीं हो पा रहा है। बल्कि स्थिति यहाँ तक पहुँच गया कि सभी जल स्त्रोतों के जवाब देने के बाद बिसलपुर से ट्रेन से पानी मंगवाकर भीलवाड़ा की प्यास शान्त करने की व्यवस्था प्रशासन द्वारा की गयी। चार दिन में एक बार पानी वितरित किया जाने लगा, कमोवेश 2002 में 60 दिन, 2003 में 90 दिन, 2009 में 60 दिन, 2010 में 45 दिन व इस वर्ष तो 1 दिसम्बर 2015 से पूरे जून तक रोज तीन ट्रेन 'वाटर ट्रेन' भीलवाड़ा की प्यास बुझाने की वैकल्पिक व्यवस्था की गई। सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक ट्रेन का खर्च 4 लाख रूपये है, 2015-16 के लिए सरकार ने 6 करोड़ 63 लाख रूपये खर्च किये।

समस्या की भयावयता निरन्तर बढ़ रही है, स्थायी समाधान पर एक नवीन प्रयास चम्बल के पानी के रूप में शुरू हुआ है। शहर से 145 कि.मी. दूर भैंसरोड़गढ़ से 2152.39 करोड़ की लागत से पाईप लाईन द्वारा चम्बल से भीलवाड़ा को पानी पहुँचाया जायेगा। योजना द्वारा प्रतिदिन 68.35 मिलियन लीटर जलापूर्ति सुनिश्चित की गयी। जो आज तक दिवास्वप्न बना हुआ है।

सारांशत: यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शहर का विकास तो निश्चित ही हुआ है परन्तु अनियन्त्रित अनियोजित व लालचपूर्ण दोहन ने भीलवाड़ा शहर में अनेकों समस्याऐं खड़ी कर दी, जिसमें पेयजल प्रमुख समस्या बन चुका है, एक तरफ

www.ignited.in

भूजल स्तर 300 फीट नीचे तक जा चुका है, तो दूसरी ओर पेयजल 4 दिन में वितरित हो रहा है और शेश सभी नदियों को भी प्रदुषित जल से काला कर दिया गया है। विकास जरूरी है यह समझा जा सकता है, परन्तु मानवीय जीवन को संकट में डाल कर, ऐसे बद्शक्ल विकास की वकालत कैसे की जा सकती है। समाधान हमें मिल कर खोजना होगा, आम आदमी को भी पेयजल की तार्किक उपयोगिता तय करनी होगी तो उद्योगों को भी मुनाफे की रणनीति से ऊपर उठकर अपने समाजिक सरोकार को भी समझना होगा।

सन्दर्भ सूची

1. Dickinson R.E., City, Region and Regionalism, Routledge and Kegan Paul, London, 1947, p. 20.

2. Jefferson M., “The Anthropogeography of Some Great Cities” Bulletin of the American Geographical Society, New York, 1909, pp. 537-66.

3. Christaller, W., Central Places in Southern Germany, First English Translation by Baskin, C.W. Prentice-Hall, Englewood Cliffs, 1966.

4. Taylor G., Urbon Geography, Methuen, London, 1949.

5. Smailes A.E., The Geography of Towns, Hutchinson, London, 1953.

6. Ahmad Q., Indian Cities, Characteristics and Correlates, University of Chicago 1965

7. Rafiullah S.M., “A New Approach to Functional Classification of Towns”, The Geographer; Vol. 12. 1965.

8. Prakasha Rao V.L.S., Regional Planning, Indian Statistical Institute, Calcutta, 1963, Prakasha Rao and Tiwari V.K. The Structure of an Indian Metropolis : A Study of Banglore, Allied Pub. New Delhi, 1979. Urbanization in India, Concept Pub. New Delhi

9. जोशी, रतनलाल, 1989: चतुर्थ श्रेणी के नगरीय केन्द्रों का भूमि उपयोग प्रतिरूप: भीलवाड़ा जिले का एक प्रतीकात्मक अध्ययन, Annals of the RGA, अंक-9, pp. 65-68.

10. Lodha, R.M., 1970 : Indices determining the Umland of Bhilwara Town, Proceeding of RGA Conf., IV conf., pp. 27-36.

11. Verma, L.C., 1980 : Locational Analysis of Road Accident Sites in Bhilwara, Proceeding of RGA Conf., XIII conf., pp. 65-73

Corresponding Author

Dr. Santosh Anand*

Associate Professor, (Geography), Shri M.L.V Government PG College, Bhilwara, Rajasthan

www.ignited.in